शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

गोंडी लोकगीत एवं उनका महत्व

डॉ. लोहारसिंह ब्राह्मणे
शासकीय महाविद्यालय
पानसेमल, बडवानी. मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

गोंडी लोकसाहित्य के भण्डार में लोकगीतों की संख्या अनगिनत है। मौखिक और मौलिक रूप में पाये जाने वाले असंख्य लोकगीतों का स्थान वाचिक परम्परा में सर्वोच्च और महत्त्वपूर्ण है। लोकगीत लोक संस्कृति के समग्र संवाहक है। लोकगीत किसी जाति, समूह और देष की लोकसंस्कृति के परिचायक होते हैं उनमें जीवन की प्रत्येक धड़कनों का एहसास देखा जा सकता है। गोंडी लोकसंस्कृति में विविध संस्कारों के लोकगीत प्रचलित है। जैसे-जन्म संस्कार, विवाह संस्कार एवं मुत्यू संस्कार आदि संस्कारों के अवसर पर अनेक लोकगीत गाये जाते है, जो गोंड जनजातीय जीवन की लोकसंस्कृति को बया करते है। गोंडी लोकसाहित्य में लोकगीत गोंड जन-जीवन की उल्लासमय अभिव्यक्ति है, जिसके माध्यम से गोंड जनजाति के लोग अपने जीवन को आनन्दमय बनाते हैं।

प्रस्तावना

गोंड जनजाति के लोग अपने प्रत्येक पर्व एवं त्यौहारों को बड़ेहर्षोउल्लास, उमंग, नाच-गाने, पूजा-पाठ आदि पारंपरिक रूप से मनाते है। गोंड जाति के लोग प्रमुख रूप से अनेक त्यौहार मनाते है, जिसमें-बिदरी,बकबंधी, हरढिली, नवाखानी, जवारा, मड़ई छेरता, दीपावली, एवं होली इत्यादि।आदिवासियों का जीवन ही गायन, वादन और नर्तन की त्रिवेणी संगम जैसा होताहै। लोकनृत्यों में गोंड जनजातीय समाज के करमा नृत्यगीत, सैला नृत्यगीत, सुआ नृत्य इत्यादि। लोकगीत एवं लोकनृत्यगीत गोंड जनजातीय समाज में अत्यधिक महत्त्व रखते हैं। गोंड आदिवासियों का समस्त जीवन लोकगीतों और नृत्य के लालित्य से परिपूर्ण रहा है। ये गोंड आदिवासी पर्वतों की दुर्गम चढ़ाई को ये गीतों के सहारे सुगम बनाते रहते हैं। अभावों के बीच हँसना, कठिनाइयों में मुस्कराना, विपत्तियों की डगर में झूमकर चलना, ज्वालामुखी पर्वत के षिखर पर बैठकर गुनगुनाना, व्याघ्रों से घिरे हुए कानन में निर्भय होकर मुरली बजाना एवं ग्रीष्म के तपे हुए सूर्य के नीचे आनन्दमग्य होकर ढोल पर थापें मारना आदिवासी से ही सीखा जा सकता है। गोंडी लोकसाहित्य में इनके ये लोकगीत हृदय के अविनश्वर स्वर हैं, जिनमें जीवन के सुख-दुख, आस्थाएँ, मान्यताएँ, विश्वास, परम्पराएँ धार्मिक चिन्तन, देवाराधन, जिन्दगी के उतार-चढ़ाव, शांति-विद्रोह, लोक-विश्वास, सामाजिक व्यवस्था, कर्मशीलता, प्रेम-सौन्दर्य, प्रकृति-मनोहरता आदि रूप स्पष्ट से द्रष्टिगोचर होते हैं। आजकल पारम्परिक लोकधुनों में स्वयं की रचनाओं को

लोकगीतों का नाम देकर गाये जाने की प्रवृत्ति भी पनप रही है। प्राचीन परम्परागत लोकगीतों की भावभूमि जितनी उच्च उदार और व्यापक होती है, उतनी किसी तुकबंदी में कहाँ से मिल सकती है ? आज पारम्परिक लोकगीतों को उनके मूल रूप और स्वर में सहेजकर रखना हमारा उत्तरदायित्व होना चाहिए, वर्ना लोकगीतों की रस की गंगा सूखती चली जायेगी।

लोक साहित्य के भण्डार में लोकगीतों की संख्या अनगिनत है। मौखिक और मौलिक रूप में पाये जाने वाले असंख्य लोकगीतों का स्थान वाचिक परम्परा में सर्वोच्च और महत्त्वपूर्ण है। लोकगीत लोक संस्कृति के समग्र संवाहक है। लोकगीत किसी जाति, समूह और देश की लोकसंस्कृति के परिचायक होते हैं उनमें जीवन की प्रत्येक धड़कनों का एहसास देखा जा सकता है। गोंडी लोकगीतों में जन्म संस्कार के गीतों में-जनेउ, छठी पूजन, मुंड़न आदि विवाह संस्कार के गीतों में सगाई, विवाह में विभिन्न प्रकार के गीत तथा हास-परिहास, मनोरंजन के गीत, प्रेम गीत व नृत्यलोकगीत तथा देवी-देवताओं से संबंधित अनेक गीत सहज रूप से मिलते है। इन गोंडी भाषा के लोकगीतों में गोंड जनजातीय जीवन के महत्त्व को बताया गया है।

गोंडी बोली का परिचय

गोंड जनजाति के लोग गोंडी बोली बोलते हैं। यह बोली द्रविड़ भाषा परिवार की उपभाषा कही जा सकती है। देष के जिन भागों में गोंड जनजातियां निवास करती है, उस क्षेत्र की भाषा और बोली का प्रभाव गोंडी पर अवष्य पड़ता है। अतः गोंडी बोली बोलने वाले गोंड संबंधित क्षेत्रीय बोली से प्रभावित हो जाते हैं, जिससे गोंडी के पर्याप्त शब्दों में आंषिक परिवर्तन हो जाता है। इन्हीं कारणों से प्रायः प्रत्येक क्षेत्र की गोंड जनजातियों की बोलियों में कुछ न कुछ अंतर अवश्य पाया जाता है, जबकि संबंधित क्षेत्रों की प्रमख भाषाएं एवं बोलियोंः जैसे-बघेली, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, मराठी, उड़िया, तमिल, तेलगू, बंगाली, हिन्दी आदि का प्रभाव भी गोंडी बोलने वालों पर पड़ता है। भाषा और बोली के सामान्य सिद्धांतों के अनुसार व्यक्ति और समाज संबंधित भाषा व बोली के साथ ही उसकी सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों से भी प्रभावित होता है। इन्हीं कारणों से संभवतः गोंडी बोलने वाली गोंड जनजातियां, जिस क्षेत्र में रहती हैं, उस क्षेत्र की समस्त गतिविधियों से प्रभावित होने के कारण भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की गोडी बोली में भी अंतर पाया जाता है, जैसा कि सामान्यतः लोगो द्वारा कहा गया है-

कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी।1

अर्थात् पानह और बानी (बोली) में कुछ-कुछ दूरी पर अवश्य अंतर पाया जाता है। ये गोंड जनजाति के लोग जिन भाषा-भाषी लोगों के संपर्क में रहते हैं, उनकी बोली तथा इनकी मातृबोली के सामंजस्य से बोलचाल की भाषा में अंतर होना स्वाभाविक है पर उसका माधुर्य और महत्व ही कुछ और होता है। सामान्यतः सुदूर आदिवासी अंचल जहां गोंड दंपती रहते हैं और गोंडी बोली बोलते हैं, वहां उनके बच्चे अपने माता-पिता से जो बोली बोलना सीखते हैं, उसका अमिट प्रभाव उनके मस्तिष्क पर पड़ता है और जीवनभर उससे उनकी सभ्यता बनी रहती है। भले ही बच्चा बड़ा होकर अनेक बोलियों और

भाषाओं का ज्ञाता क्यों न हो जाए, किन्तु जो सुख-संतोष, आनंद और आत्मीयता की अनुभूति उसे अपने माता-पिता से सीखी हुई बोली-भाषा से होती है, वह आनंद अवर्णनीय है। इन्हीं कारणों से तो अपनी मातृभाषा में बोलना आधिक पंसद करते हैं। यहीं नहीं अपितु अपनी बोली और भाषा के लोकगीत भी मनुष्य को अत्यधिक प्रिय लगते हैं।

गोंडी भाषा

यह विश्व की एक प्रमुख भाषा है। गोंडी भाषा करोड़ों लोगों की भाषा है यह भाषा प्राचीन काल की भाषा है। जब पृथ्वी का उद्‌गम हुआ और इस पृथ्वी पर मनुष्य का जन्म हुआ तब इस भाषा का भी जन्म हुआ।

गोंडी भाषा गोंडवाना साम्राज्य की मातृभाषा है। गोंडी भाषा अति प्राचीन भाषा होने के कारण अनेक देशी-विदेशी भाषाओं की जननी रही है। गोंडी धर्म दर्शन के अनुसार गोंडी भाषा का निर्माण आराध्य देव शंभू के डमरू से हुई, जिसे गोएन्दाधि वाणी या गोंदवानी कहा जाता है। अति प्राचीन भाषा होने की वह वजह से गोंडी भाषा अपने आप में पूरी तरह से पूर्ण है। गोंडी भाषा की अपनी लिपि है, व्याकरण है जिसे समय-समय पर गोंडी साहित्यकारों ने पुस्तकों के माध्यम से प्रकाषित किया है। गोदिया समाज की अपनी मातृभाषा गोंडी है। वर्तमान में गोंडी भाषा बोलने वालों की संख्या सात करोड़ है।

गोंडी लोकगीतों का विवेचन

ग्रामीण जीवन व्यतीत करने वाले ये लोग सुदूर पहाड़ी व वन क्षेत्र में रहते हैं, जो अपने मनोरंजन के लिए उन्हीं सब साधनों का उपयोग वे करते हैं जो उस परिस्थिति में उन्हें उपलब्ध हो सकते हैं। इनमें सर्वाधिक मनोरंजन ये गीत और नृत्य से करते हैं। रात को स्त्री-पुरूष दोनों खाने-पीने के बाद प्रायः सामूहिक गीत-नृत्य ग्रामीण स्तर पर भी करते हैं तथा पारिवारिक स्तर पर भी गाते हैं और नाचते है। ये गीत मौसम, समय और परिस्थितियों आदि के अनुरूप गाये जाते हैं। गोंड आदिवासी अपने देवी-देवताओं के प्रति अत्यधिक आस्थावान होते हैं। अतः उक्त विषयक एक गोंडी गीत इस प्रकार है, जो विनोरी धुर्वे द्‌वारा लिखित गीत है-

1.बेगा मदाल निवा डेरा रो गुरूवा देव, बेगा मदाल निवा डेरा।
आली मड़ाते मदाल निवा डेरा रो, आली गुरूवा बेगा मदाल निवा डेरा।
रूनूक झूनूक ईमा वायेनी रो आली, गुरूवा रूनूक झूनूक ईमा वायेनी।
नारियल भेंट निकूल सेवेना रो आली, गुरूवा नारियल भेंट निकून सेवेना।
बेगा मदाल निवा डेरा रो गुरूवा देव, बेगा मदाल निवा डेरा।
निबुआ भेंट निकूल सेवेना रो आली, गुरूवा निबुआ भेंट निकून सेवेना।
कूकू ता टीका निकून लकिवेना रो आली, गुरूवा रूनूक झुनूक ईमा वायेनी। बेगा मदाल निवा डेरा।2

भावार्थ- हे गरूवा देवा आपका निवास कहाँ पर होगा। निवास तो पीतल के पेड़ पर ही होगा। आप अपने निवास से रून-झुन करते हुए आना। आपको हम नारियल, नीबू चढ़ायेंगे तथा कंकू का टीका लगायेंगे। तात्पर्य यह है कि गोंड जनजाति के लोग अपने आराध्य के आवास की उत्कंठा से

प्रतीक्षा करते हुए पूजा की विविध सामग्रियों से उनकी उपासना-अर्चना में भाव-विभोर हो, अपनी असीम आस्था गीत के माध्यम से व्यक्त करते हैं, जो वनांचल में गूंजकर श्रोताओं को आह्लादित करती है तथा आराध्य को प्रसन्न करती है। गुरूवा देवा का आह्वान ये गोंड जनजाति के लोग गुनिया पर प्रभावशाली होने के लिए भी करते हैं, जो इनकी असीम आस्था व भक्ति भावना का परिचायक है। गोंड जनजाति के लोग इस अवसर पर अपने असीम आह्लाद की अभिव्यक्ति करते हैं। अतः इस प्रसंग में इनका एक विवाह गीत इस प्रकार है-

2.बाडांग कियाता बाड़ांग कियाता, मावा लमजावाताड् बाड़ांग कियाता।

येर तताता येर तताता, सरी सुरीता सारी सुरीता, वाडांग कियाजा बाड़ांग कियाता।

बेगाये दाल बेगाये दाल, मावा लमजावाड् बेगाये-दाल, नेदेये दाल-नेदेये दाल, मावा लमजावताड् ने देये दाल।

जाडीये कोईयाल जाड़ीये कोईयाल, मावा लमजावाताड् जाड़ीये कोईयाल। रोने तताल रोने तताल, मावा लमजावाड् रोने तताल। 3

भावार्थ-गोंड जनजाति के उक्त विवाह गीत में लमसना विवाह पद्धति में लड़का वधू के घर जाता है, जहां वधू की विशेषताएं विविध प्रकार के भोजन, जल आदि ले आने के विषय में बताई गई है कि कितनी कुशल वह है जो सब कार्य अच्छी तरह करती है। विवाह के अवसर पर भी यह गीत बाजे-गाजे के साथ नृत्य करते हुए गाया जाता है।

3.चोला रोवत हे राम, बिन देखे पराना, चोला रोवत है रे ।

दादर, झाँखर झोड़ी ढूढ़यों, डोगर बीच मझाय। सबै पतेरन तोला ढूढ़यों, कहां लुके है जाय।।

चोला.।। माया ला तै कसके टोरे, सुरता मोर भुलाई।

मोर मड़ैया सूनी करके कहां करे पहुनाई।।

चोला.।।

इन नैनन में नींद न आये हिरदय हो गये सूना। डोंगर डहरी तोला ढूढ़यों विपदा बढ़ गै दूना।।

चोला.।। जैसे डोले पीपर पत्ता, जैसे केरा पात। बिन देखे अप जोड़ी तोला, ब्याकुल हो थैं आन।।

चोला.।। उड़ता पंछी रैन बसेरा दूर कहीं पै जाथै। पिंजरा सूना, विपदा दूना तेखर मा अकुला थै।।

चोला.।।4

भावार्थ-प्रेमी बिछुड़ गया है। प्रेमिका रो रही है। कहती है कि-बिना प्राण प्यारे को देखे यह प्राण रो रहा है। पहाड़ के बीच में दादर, झाँवर नदी-नाले तथा पतेरन में तुझे ढूँंढ मारा पर तुम नहीं मिले न जाने कहाँ छिप गये हौ। तुमने मेरा प्रेम कैसे ठुकरा दिया, मेरी याद कैसे भुला दी, मेरी झोपड़ी को सूना करके दूसरी जगह कहाँ मेहमानी की है। इन आँखों में नींद नहीं आ रही है। हृदय सूना हो गया है। पहाड़ और उसकी गलियों में तुझे ढूँढती फिर रही हूँ। मेरी विपप्ति दिन दूनी बढ़ गई है। जैसै-हवा से पीपल का पत्ता और केले का पत्ता, हिलता है, उसी तरह से हे जोड़ी तुझे देखे बिना मेरे ये प्राण व्याकुल हो रहे हैं। उड़ता हुआ पंछी रात का बसेरा लेने के लिए कहीं दूर जा रहा है पिंजरा खाली है, दुख दूना हो गया है इससे वह घबरा रहा है।

4.छीजे ला जावो यार, साजा नार डबरा, सींचेला जावो रे ।।

सींच सींच के मछरी लावो, खेदा मा शिकार।

दोनों झना बासी राघवो, जिंदगी के आधार।।

जाये ला डोंगर काटे ला बाधी यार। तै तो हवै वैया हमार गादी।।

छीजे ला जावो रे....।।

खाले पीले लैले दैले, करले भोग बिलासा। काल परो तैं मर हर जावें छतिया जमही घासा।।

पान खाय पंसारी के लड़का बिड़ी पिये मिजाजी। खेल कूदे के मजा उड़ाइले दो दिन की जिंदगानी।।

नागर तो जोतिव नहिं आप मुठिया। मोर संग रहते वैया, पहरातों चुरिया।। छीजे ला जावो...।। 5

भावार्थ-साजा वाले पानी के डबरे को उलीचने जायेंगे। पानी उलीचकर मछली लायेंगे और जंगल में हाँका करके शिकार लायेंगे। फिर दोनों झने भात बनायेंगे जो जीवन का आधार है। पहाड़ जाते है काटने के लिए बाधी, अरी बाई! तू तो सही मायने में हमारी जोड़ी है। याने सब तरह से अपने मन को संतोष कर ले, कल परसों तू मर जायेगी तो छाती में घास जमेगा। पनसारी का लड़का पान खाता है और मिजाजी का लड़का बीड़ी पीता है। दो दिना की जिन्दगानी है तू खेल कूद के मजा उड़ा ले। हल जोत रहा हूँ पर हल में मुठिया नहीं है। अरी बाई! अगर तू मेरे साथ रहोगी तो तुझे चूड़ी पहनाउँगा।

5.चोला नहिं माने राम।

बिन देखे पराया चोला नहिं माने रे।

लोटा के तो पानी छूटगै, औ थारी के भात।

कौड़ा ढिगा बैठे बैठे, कट जाथै या रात।

दादर झाँखर तोला ढूँढ़यो डोरगर बीच मझाय।

सबै पतेरन तोला ढूँढ़यो कहां लुके है जाय।

आमा के अमरैया कैसे औ कोदों खलिहान।

मन में घोखत घोखत संगी हुइ जाथै बिहान।

चोला भीतर आगी बरथै ऊपर ले मुंगआथै।

असुवन के तो नन्दी बहथै जब्बे सुरता आथे।

कैये मा तै माया छाड़े, सुरता मोर भुलाई। गल्ली खोरी तोला खोजों हंसा रैन उड़ाई।। 6

भावार्थ-बिना प्रीतम प्यारे के देखे ये मन नहीं मानता। खाना-पीना सब छूट गया है। आग के अलाव के पास बैठे-बैठे सारी रात कट जाती है। पहाड़ के दादर में, झाँवर में और पहाड़ के बीच में तुझे ढूँढ़ मारा, न जाने तू कहाँ पर जाकर छिपा है। आम के बगीचे मे और कोदों की खलिहान में बैठ-बैठ और तुझें सोचते-सोचते साथी सबेरा हो जाता है। शरीर के भीतर आज जल रही है। ऊपर से वह मुंगवा रही है याने प्रेम की दंवार लगी है। आँसुओं की नदी बहती है जब तेरी सुध आती है। तूने मेरी सुध कैसे भुला दी, कैसे प्रेम त्याग किया, मैंने तुझे गली अैर डहरी में खोज मारा पर प्राण ये शरीर को छोड़कर दूर उड़ गए।

6.बैला चलिन राई घाट, करौंदा बैला छोटे-छोटे रे.....।

डोगर में आगी जगै जरथै पतेरा।

डोगर में आगी जगै जरथै पतेरा। सुन सुन के हीरा मोरा जरथै करेजा।। बेला छोटे-छोटे रे ...।।

महुआ का लाटा खम्हेर ठोला। लौट के आवे हमार टोला।

पीपर के पत्ता पवन हिजना। चोला तलफ मैं कबै तो मिलना।। बेला छोटे-छोटे रे ...।।

आई नरबदा बहै तो बारू। लौअ आवे छबीला पियाहूँ दारू।। बेला छोटे-छोटे रे ...।।

कबै कटही या रैन, कब होही सबैरा। तोर बिना जोड़ी मोर जग है अंधेरा।। बेला छोटे-छोटे रे।।7

भावार्थ-इस गीत में कहा गया है कि-युगल प्रेमी बिछुड़ रहे हैं। प्रेमी युवक बैल लादकर जा रहा है तो प्रेमिका कहती है कि-करौंदा रंग के काले बैल जो छोटे-छोटे है, जो राई घाट की ओर चले गये। पहाड़ में आग लगी है। ये सुन सुन के जोड़ी मेरा

कलेजा चल रहा है ये सोचकर की कहीं तुम पर विपत्ति न आ जाये। महुआ का लाटा और खम्हेर का ठोला (नाश्ता) बनाकर रखूँगी तुम लौटकर हमारे टोला जरूर आना। पीपल वृक्ष का पत्ता पवन चलने से हिलता है उसी तरह यह शरीर प्राण व्याकुल है। अब कब मिलना होगा। आई हुई यानी उफनी हुई नरबदा में रेत बह रही है अरे छबीले लौट के आओगे तो दारू पिलाऊँगी। ये राज विरह की कब कटेगी कब सबेरा होगा अरी जोडी! तेरे बिना तो मेरा सारा संसार अंधेरा है।

7.झिन मारो रे .... हाय भला झिन मारो राम।,
पोसे परोना ला झिन मारो रे.....।
लोहा के पिंजरा में भोला पंछी, माया में फंसके भुलाय भला झिन मारो रे..।।
भग जाबै पंछी तै तो दूर देषन में। न करबै सुरता हमारा भला झिन मारो रे...।।
रेती का बिरछा चुनैटी का चूना।
पानी बिना जर जाय। भला झिन मारो रे..।।
दीया की बाती में मूरख पतिंगा। सोचे बिना जर जाय।
भला झिन मारो रे..।। माहुल की बेला, करौंदा की छैया।
खुल खेलो हंसा अघाय। भला झिन मारो रे।। 8

भावार्थ-इस गीत में कहा गया है कि-दो प्रेमी आपस में मिलते हैं। प्रेमी कहता है कि-पाले पोसे प़क्षी को मत मारो। लोहे का पिंजरा है। भोला सा पक्षी है। प्रेम में फँसकर भुला गया है उसे मत मारो। उत्तर मिलता है-अरे पंछी प्यारे! तू तो दूर देशों में भग जायेगा तू हमारी याद नहीं करेगा। युवक जवाब देता हुआ कहता है कि-रेत में लगा हुआ पौधा और चुनैटी का चूना दोनों पानी के बिना मर जाते है। इसी प्रकार मैं भी प्रेम के बिना मर जाऊँगा। जलते हुए चिराग की लौ में मूर्ख पतिंगा बिना सोचे विचारे जल जाता है। माहुल की बेला और करौरदा की छाया में खुलकर खेत लो आत्मा आशा जाय, संतुष्ट हो जाय।

8.उलझ गैन्हें राम, दो नैनों से नैना उलझ गैन्हें रे।।
झरझर झरझर झोड़ी बोहथै, निरमल भै गे धारा।
तेरा मेरा माया संगी, जानत है संसारा।।
सर सर सरसर आंधी आईस, पत्ता धूर उड़ाइस।
चै फेरा ले धुंधरी छाइस, कछु न मोला दिखाईस।।
ईहाँ हवै झोड़ी झरपट, ऊहाँ है कगारा।
हाथ पकरके संगे जावो तामिच पावो पारा।।
न मोला खाये जाय न मोला पिये जाये।
घोख परे कछू न सुहावै।।
न मोला राई दिखे न मोला रूखवा।
न मोला संगी दिखे केखर संग जीवन बिताऊँ।।9

भावार्थ- दो प्रेमी मिले। एक दूसरे को देखा। दोनों के नेत्र एक दूसरे के नेत्रों से उलझ गये। एक प्रेमी कहता है-छोटा सा नाला झरझर करके बह रहा है। उसकी धारा मैली नहीं है उसी तरह हे संगी! तेरी तेरी प्रीत को यह संसार जानता है जो पानी की धारा के समान निर्मल है। दूसरा प्रेमी कहता है कि-सर सरा के हवा चल रही है जो चारों ओर धूल उड़ा रही है। चारों तरफ से धुंधली छा गई है। कुछ दिखाई नहीं देता। प्रेमी जवाब देता है कि-इस ओर नदी नाले हैं। उस तरफ कगार है याने राह में संकट ही संकट है। ऐसी दशा में एक-दूसरे का हाथ पकड़ के साथ-साथ चलेंगे तभी कठिन राह को पार कर सकेंगे। मुझसे न खाया जाता है। न मुझसे पानी पिया जाता है। जब सोचती हूँ तब कुछ नहीं अच्छा लगता। न मुझे बोई हुई राई दिखती है न मुझे झाड़ दिखते हैं न मुझे साथ देने वाला साथी

दिखता है। मैं किसके साथ यह रास्ता तय करू।

सैला भड़ौनी गीत

9.तारी रे नाना, तारी नारी नाना रे।

तारी रे नाना, तारी नारी नाना। बारी कचरिया फरे लटी झोर रे।

भाभी के चुटका ला लेंगे देवर चोर।

देवर खों पकर पातों मार तों मूसर चार रे।

भाभी के बिंदिया ला देंगे देवर चोर रे।

छेवर खों पकर पातों मारतों मूसर चार रे ।।10

भावार्थ-देवर और भाभी का इस गीत में मजाक है-बाड़ी में कचरिया खूब फली हुई है। भाभी की चुटकी को देवर चुरा कर ले गया। भाभी कहती है कि-देवर को पकड़ पाती तो चार मूसल मारती। भाभी की अँगिया को देवर चुराकर ले गया। भाभी कहती है कि-देवर को पकड़ पाती तो चार मूसल मारती। भाभी की बिंदिया को देवर चुराकर ले गया। भाभी कहती है कि-अगर देवर को पकड़ पाती तो चार मूसल मारती। इस प्रकार गीत के माध्यम से भाभी और देवर हास-परिहास व मनोरंजन करते है।

सजनी गीत-

10.मुरजा के घर साजन आये, नाचो पंख पसार।

उमड़-घुमड़ के बदरा छाये, शीतल चले बयार।

दूर देश के हम परदेशी, करलो कुछ सत्कार।

का चाहिए जेवनार तुम्हारो, का चाहिए सत्कार।

रूप तुम्हारो भोजन चाहिए, नैनन को सत्कार।

ऐसी बाते करो न हसते, हो जैहें सत्कार।

आओ सजनी हिल मिल करके, बंद करे सत्कार।

11 भावार्थ-इस गीत में कहा गया है कि-समधन के घर समधी आये है। अब पंख फैलाकर नाचो। आकाश में बादल छाये हुए है और ठंडी हवा चल रही है। साजन कहते है कि-हम परदेशी हैं। दूर देश से आये हैं, हमारा कुछ सत्कार कर लो। समधन उत्तर देती हुई कहती है कि-तुम्हें कौन सा भोजन चाहिए और किस प्रकार का स्वागत ? जवाब मिलता है कि- तुम्हारा स्वरूप ही हमारा भोजन है और तुम्हारे नैनों से हमारा सत्कार हो। समधिनें जवाब देती है कि-तुम हमसे ऐसी बाते मत करो, नहीं तो झगड़ा हो जायेगा। दोनों में मेल हो जाता है और कहते हैं-सजनी आओ दोनों हिल-मिलकर यह झगड़ा बन्द करें।

जस गीत

11.ये हो बूढ़ा महाराज, सेवा तुम्हारी हम सब करे हो मा।।

लीपी पोती चैंतरिया, महुवा के छाँव।

ऊहाँ बिराजे बड़े देवता, गोंडन के गाँव।।

फूल चढ़ाऊँ दूध मोगरा रे नरियर के भोग।

आज सहायक हुइ जा, विपदा ला टोर।।

तोरे भरोसा करथन रे माया झन टोर।

पूरन काज ला करदे, पैंया लागों तोर।।12

भावार्थ-इस गीत में कहा गया है कि-हे बुढ़ा देव! हस सब लोग तुम्हारी सेवा या पूजा करते है। चबूतरा लीपा-पोता स्वच्छ है। उस पर महुआ वृक्ष की छाया है। वह यानी उसी चबूतरे पर बूढ़ा देवता विराजमान हैं। हे बूढ़ा देव! मैं तेरी पूजा में मोंगरा के फूल चढ़ाऊंगा। नारियल का भोग लगाऊँगा। तू आज मेरी मदद करने को तैयार हो जा, मैं तेरे पैर पड़ता हूँ। हम तेरा भरोसा करते हैं तू हमसे माया या प्रेम मत तोड़ो। हमारे काम पूरे कर दे। हम तेरे पैर पड़ते हैं। इस प्रकार लोकगीतों के माध्यम से गोंड जनजाति के लोग बूढ़ादेव की पूजा-अर्चना करते हैं।

ददरिया गीत-

12 .झन झन गारी देओ बाई, मा थे जमुरिया ला झप् गारी दे।।

आमा ला टोरय खाहुँच कहके।

मोला दया में बुलाए आहुँच कहके।।
रंग गुगाली सिंचटा आयो।
तोरे घर की दुअरिया पूंछत आयो।।
सिंगी भाटा खर खर नदिया दतून कर लें।
जाने वाले सँवरिया सलाम करले ।।
सिंगी भाटा पान तो खाये करेला मुँह लाल।
ज्यादा माया झैं बढ़ाये हो जाहीं जिव के काल।।
सिंगी भाटा 13

भावार्थ-इस गीत में कहा गया है कि-अरी बाई! तुम मुझे गाली मत दो। अपने संगी साथी को गाली मत दो। मैंने आम तोड़े हैं, खायेंगे करके, मुझे धोखा देके बुला लिया है। मैं प्यार में गुलाल रंग सींचते आया और तेरे घर का द्वार पूछते आया। नदी खल खलाती हुए बह रही हैं। दातौन करके हाथ मुँह धोले। अरे जाने वाले साँवरिया सलाम तो कर ले। क्या तुमने पान खाया है। मुँह को लाल किये हो अरे ज्यादा प्रीत मत बढ़ाना, जो का जंजाल हो जायेगा। एक बार लोकगीतों पर विचार व्यक्त करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि-"लोकगीतों में धरती गाती है, पहाड़ गाते हैं, फयले गाती हैं, उत्सव और मेले, ऋतुएँ और परम्पराएँ भी गाती है।" 14

गोंड जनजाति की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक पृष्ठभूमि इन लोकगीतों में व्याप्त है। पारिवारिक रिश्ते-नाते, प्रणय, दर्शन, आस्था, विश्वास आदि इन लोकगीतों में मुखरित हुए है।4.

गोंडी लोकगीतो का महत्व

लोकसाहित्य के भण्डार में लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। गोंडी लोकगीत लिखित और मौलिक रूप में विद्यमान है। ये लोकगीत गोंड जनजाति के लोकसाहित्य को बया करते हैं। गोंड लोक संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति में से एक है और इस लोक संस्कृति को बनाये रखने में गोंडी लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। गोंडी लोकगीतों में मानव का समस्त जीवन व्यक्त हुआ है। ये प्रकृति गान है। शिशु के जन्म से लेकर मृत्यु तक लोकगीतों में विभिन्न रूपों में जीवन का रंग मिलता है। गोंड जनजाति के लोग अपने प्रत्येक पर्व एवं त्यौहारों बड़े हर्षोल्लास, उमंग, नाच-गाने, पूजा-पाठ आदि पारंपरिक रूप से मनाते है। गोंड जाति के लोग प्रमुख रूप से आठ त्यौहार मनाते है, जिसमें-बिदरी, हरढिली, नवाखानी, जवारा, छेरता दीपावली, दशहरा एवं होली इत्यादि। लोकगीत प्राकृतिक गान हैं जिसमें लोक का समस्त जीवन व्यक्त होता है। इन गीतों में जीवन की सच्ची झलक मिलती है। भाई-बहन की बिछुड़न गाथा, युगल प्रेमियों का विरह मिलन, आभूषण प्रेम, किसानों की गरीबी आदि के भाव इन गीतों में भरे हुए है। इसके सिवाय गोंडी लोकगीतों में जीवन का सत्य और उसका सच्चा स्वरूप मिलता है। मध्यप्रदेश के लोकनृत्यों में गोंड जनजातीय समाज के करमानृत्य गीत, सैला नृत्यगीत, भड़ौनी गीत, सजनी गीत, गोंडवानी गीत, पंडवानी गीत एवं रामायणी इत्यादि नृत्य व लोक नृत्यगीतों का गोंड जनजातीय समाज में अत्यधिक महत्त्व रखते हैं।

निष्कर्ष

गोंड जनजाति की समृद्ध लोक परम्परा अपने ढ़ंग में निराली है। इस जनजातीय समाज में लोकगीतों को लिपिबद्ध करने का प्रयास कम हुआ है, परन्तु मौखिम रूप में प्रचुर मात्रा में मिलता है। गोंडी लोकगीतों में इस जनजाति की

लोकसंस्कृति, परम्पराएँ, व्यवहार और समाज की वास्तविक स्थिति का परिचय मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ-

1 डा.भोभनाथ पाठक, गोंड जनजाति, पृष्ठ संख्या-90
2.डा.भोभनाथ पाठक, गोंड जनजाति,पृष्ठ संख्या-95
3.वही, पृष्ठ संख्या-96
4. शेख गुलाब, गोंड जनजाति के प्रेम गीत, पृष्ठ संख्या-10
5.शेख गुलाब, गोंड जनजाति के प्रेम गीत पृष्ठ संख्या-13
6.वही, पृष्ठ संख्या-15
7.वही, पृष्ठ संख्या-17
8 वही, पृष्ठ संख्या-19
9. वही, पृष्ठ संख्या-11
10.डॉ.कपिल तिवारी, संपदा (म.प्र. की जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा का साक्ष्य), पृष्ठ संख्या-378-76
11.डॉ.कपिल तिवारी - संपदा (म.प्र. की जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा का साक्ष्य), पृष्ठ संख्या-377
12 वही पृष्ठ संख्या-378
13. वही, पृष्ठ संख्या-379 14. संपादक-लक्ष्मीनारायण गर्ग - लोक संगीत अंक, पृष्ठ संख्या-99